हिन्दी मिलाप

अस्तित्व-रक्षा के लिए संघर्षरत कठपुतली कला

भारत में पारंपरिक कठपुतली नाटकों को सफल बनाने में लोक कथाओं और ग्रंथों का बहुत बड़ा योगदान है। यह कला लगभग 2 हजार साल पुरानी भारतीय संस्कृति की धरोहर मानी जाती है। पहले नाटकों को प्रस्तुत करने का एकमात्र माध्यम कठपुतलियाँ ही थीं। लकड़ी के बने ये कलाकार अपनी अदायगी से लोगों के दिलों में घर कर जाते थे, लेकिन आर्थिक सहायता और प्रोत्साहन के अभाव के चलते आज यह कला अपने अस्तित्व-रक्षा के लिए संघर्षरत है।

स्फूर्ति थियेटर फॉर एजुकेशनल पपेट्री, आर्ट एंड क्राफ्ट् (स्टेपआर्क) एक गैर लाभकारी संगठन है, जो लगभग 14 वर्षों से कठपुतली नाटकों के माध्यम से समाज को जागरूक करने का कार्य कर रही है। इसकी संस्थापक पद्मिनी रंगराजन ने बताया कि उन्हें कठपुतली कला से बेहद लगाव है, इसलिए उन्होंने अपनी नौकरी को छोड़कर इस क्षेत्र में कदम रखा। कठपुतली कला को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने ई-पत्रिका की भी शुरुआत की है, जिससे कला प्रेमी इससे सीधे तौर पर जुड़ सकें। विभिन्न ट्रेनिंग कार्यक्रमों के माध्यम से कलाकारों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

सरकार की योजना और अन्य जागरूकता कार्यक्रम के लिए कठपुतलियों का विशेष उपयोग होने के बावजूद यह कला धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है। इस कला को पीछे धकेलने में कम्यूनिकेशन की कमी भी एक बड़ी वजह है। तेलंगाना में कई स्थानों पर बेहतरीन पप्पेट शो का आयोजन किया जाता है, लेकिन अन्य कार्यक्रमों की तुलना में इसे कम दर्शक देखने आते हैं, जिसका असर कलाकार के मनोबल पर पड़ता है। इसके अलावा बजट की भी कमी रहती है। एक फिल्म देखने के लिए लोग 500 से 1000 तक खर्च कर देते हैं, लेकिन पप्पेट शो को आयोजित करवाने के लिए तोल-मोल करते हैं। एक टीम में लोगों की संख्या के अनुसार बजट भी बढ़ जाता है, और कम बजट में एक बेहतरीन कहानी को बयां करना मुश्किल हो जाता है।

समस्या सिर्फ इतनी ही नहीं है। कठपुतली कलाकार किसी राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर के शो में हिस्सा लेना चाहें तो उन्हें वो सहुलियत और लाभ नहीं मिलते, जो अन्य क्षेत्रों के कलाकारों को मिलते हैं। ये ऐसी कमियां हैं, जिनकी वजह से उभरते कलाकार अपनी पहचान नहीं बना पाते हैं और फिर कहीं गुमनामी के अंधेरों में खो जाते हैं। पद्मिनी रंगराजन कहती हैं कि उन्हें इस हुनर से बचपन से ही लगाव था, इसलिए जीवन के आखिरी क्षण तक वे इस कला को आगे बढ़ाने की दिशा में काम करती रहेंगी।

-भावना झा